उपज प्रति हेक्ट.	-	9-10 टन (बीज)
विक्रय मूल्य	-	50 रु. प्रति कि.ग्रा.
व्यय/हेक्टे.	-	रु. 5,000
आय	-	50,000 रुपये प्रति हेक्टे.
लाभ	-	रु. 45,000/हेक्टे.

•••

औषधीय एवं सगंध पौधों से संबंधित ;

- रोपणी तकनीक
- कृषि तकनीक
- पौध सामग्री की उपलब्धता
- बीज उपलब्धता
- बाजार व्यवस्था
- औषधीय निर्माणियों की मांग
- निर्माणियों एवं कृषकों में संबंध

जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर सविस्तार जानकारियाँ प्राप्त करने के लिये निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं ;

संचालक
राज्य वन अनुसंधान संस्थान,
पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) - 482 008
फोन - (0761) 665540 फेक्स - (0761) 661304

Printed at : Reliable Printed Products, Jbp. ✆ : 315501

एस.एफ.आर.आई. प्रचार पत्रिका - 27

मुश्कदाना

(एबलमॉसकस मॉस्केटस)

जैव विविधता एवं औषधी पौध शाला

म.प्र. राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

2001

मुश्कदाना
(एबलमॉसकस मॉस्केटस)

मुश्कदाना को लताकस्तूरी, कस्तूरी भिण्डी के नाम से भी जाना जाता है। यह मिश्रित वनों में पाया जाने वाला पौधा है। मध्यप्रदेश में यह मंडला, रायगढ़, शहडोल आदि जिलों के वनों में पाया जाता है। मुश्कदाना 3-4 फुट लंबा झाड़ीनुमा पौधा है। यह मूलतः आफ्रीका का पौधा है। इसकी पत्तियाँ रोमयुक्त, कांटेदार, पंचकोणीय होती है। इसके फूल आकार में बड़े, पीले व बीच में बैगनी रंग के आकर्षक होते हैं। जो कि सितंबर से नवंबर माह में देखे जाते हैं। इसके फल भिण्डी की तरह होते हैं। फल पकने में फट जाता है और बीज बिखर जाते हैं। इसके बीज गोल, चिकने, हल्के पीले-भूरे रंग के होते हैं।

औषधीय गुण व उपयोगी भाग

मुश्कदाना एक पौष्टिक टॉनिक के रूप में उपयोग किया जाता है। इसके बीज कफ-शीत मारक, वात रोग, पेट के विकार, गॉनिरिया, खाज खुजली आदि में प्रयोग किये जाते हैं। हृदय रोग नियंत्रण के लिये भी यह महत्वपूर्ण दवा है। इसके बीज स्वाद में अत्यंत तीव्र होते हैं।

कृषि तकनीक

मुश्कदाना रेतीली से दोमट चिकनी मिटटी में आसानी से हो जाता है। 1200-1500 मि.मी. वर्षा इसके लिये पर्याप्त है। अधिक ठंड पड़ने पर इसे पाले से नुकसान हो सकता है। इसका प्रवर्धन बीजों द्वारा किया जाता है। इसकी खेतों में सीधी बुवाई की जाती है। बुवाई के लिये बीजों की 2 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकता होती है। जिन्हें खेतों की तैयारी के बाद 30 से.मी. की दूरी रखते हुये रोपित किया जा सकता है। लाइन से लाइन की दूरी 45 से.मी. रखी जानी चाहिये। बीज 1.5-2.0 से.मी. से ज्यादा गहरा नहीं बोया जाना चाहिये। इसका रोपण जुलाई-अगस्त में करना उत्तम है। वर्षा न होने पर या कम होने पर इसकी सिंचाई सप्ताह में एक बार की जानी आवश्यक है। प्रति हेक्टेयर में 25 क्विंटल की दर से गोबर खाद डालने से फसल में बढ़ोत्तरी होती है।

उपज एवं आर्थिकी

फसल के तैयार होने पर पके हुये केप्सूल या फल को तोड़ लिया जाता है। यह तब तक किया जाता है जब तक पके फल मिलते रहते हैं। पके बंद केप्सूल धूप में सुखाये जा सकते हैं, किन्तु फटे हुये केप्सूल छायादार स्थान पर ही सुखाये जाने चाहिये। फलों को पटककर बीजों को एकत्र कर लिया जाता है।